Chapter 5
bihar board class 9th hindi notes मैं नीर भरी दुःख की बदली

मैं नीर भरी दुःख की बदली

महादेवी वर्मा

कवि – परिचय

महादेवी वर्मा का जन्म 1907 ई . में उत्तरप्रदेश के फर्रुखाबाद शहर में हुआ था । उनकी शिक्षा – दीक्षा प्रयाग में हुई । प्रयाग महिला विद्यापीठ में प्राचार्य पद पर लंबे समय तक कार्य करते हुए उन्होंने लड़कियों की शिक्षा के लिए काफी प्रयल किए । सन् 1987 ई में उनका देहांत हो गया ।
' नीहार ' , ' रश्मि ' , ' यामा ' , ' दीपशिखा ' उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं । कविता के साथ – साथ उन्होंने सशक्त गद्य रचनाएँ भी की हैं , जिनमें रेखाचित्र तथा संस्मरण प्रमुख हैं । अतीत के चलचित्र , स्मृति की रेखाएँ , पथ के साथी , श्रृंखला की कड़ियाँ इत्यादि उनकी गद्य – रचनाएँ हैं|
महादेवी वर्मा छायावाद के चार स्तम्भों में एक विशिष्ट स्थान रखती हैं । उन्होंने 1929 से लिखना शुरू किया जिनमें उनकी कविता के क्षेत्र में सक्रिय रचनाशीलता लगभग दो दशकों 1992 ई . तक सीमित है । उनकी रचनाएँ आत्मपरक विषय प्रधान रचनाएँ हैं , जिनमें कवयित्री ने अपने ही लौकिक अलौकिक , सुख – दुखों को अभिव्यक्ति दी है । यह वस्तुगत सीमा शिल्प को भी सीमावश कर देती है । उन्होंने केवल प्रगीतों की रचना की है , जिनमें दुःख , वेदना और करुणा की अभिव्यक्ति है । अपनी प्रेमानुभूति में उन्होंने अज्ञात और असीम प्रियतम को संबोधित किया है , इसलिए उनकी कविता में आलोचकों ने रहस्यवाद की खोज की है और उन्हें रहस्यवाद की कवयित्री माना है ।

महादेवी वर्मा की काव्य – रचना के पीछे एक और स्वाधीनता आंदोलन की प्रेरणा है तो दूसरी ओर भारतीय समाज में स्त्री – जीवन की वास्तविक स्थिति का बोध भी है । यही कारण है कि उनके काव्य में जागरण की चेतना के साथ स्वतंत्रता की कामना की अभिव्यक्ति है और दुःख की अनुभूति के साथ करुणा बोध भी है । दूसरे छायावादी कवियों की तरह महादेवी वर्मा के प्रगीतो में भक्तिकाल के गीतों की प्रतिध्वनि है और लोकगीतों की अनुगूंज भी लेकिन इन दोनों के साथ ही उनके गीतों में आधुनिक बौद्धिक मानस के द्वंद्वों की अभिव्यक्ति ही प्रमुख है ।
महादेवी वर्मा के गीत अपने विशिष्ट रचाव और संगीतात्मकता के कारण अत्यंत आकर्षक हैं । उनमें लाक्षणिकता , चित्रमयत्ता और विवधर्मिता है । महादेवी ने नए विबों और प्रतीकों के माध्यम से प्रगीत की अभिव्यक्ति द्वारा शक्ति का नया विकास किया है । उनकी काव्य – भाषा प्रायः तत्सम शब्दों से निर्मित है । महादेवी मानती हैं कि समष्टि में अपने आप को लय कर देना ही कवि की मुक्ति । इस धारणा का उपयुक्त प्रतीक उन्होंने बादल को पाया है , जो धरती को हरा – भरा करके और हर चीज को विकास का वातावरण देकर स्वयं मिट जाता है । इनमें दुख किसी व्यक्तिगत अभाव का पर्याय न होकर एक संवेदनशील करुणा भाव का ही प्रतीक है ।
कविता का भावार्थ
' मैं नीर भरी दुख की बदली ' महादेवी की कविता संग्रह ' यामा ' से ली गयी है । कवयित्री को व्यक्तिगत अभावों से पैदा होनेवाला दुख इतना मूल्यवान और स्पृहणीय हो जाता है कि उसके निरंतर होने की कामना करती है और अपने को नीर भरी दुख की बदली कहती है । बदली जन से भरी होती है । बदली का जल अपने लिए नहीं होता , सृष्टि के लिए होता है ; वह तप्त विश्व को नहलाती है । बादल विश्व के लिए जल लेकर आता है और पूरे आकाश में छा जाता है । लगता है कि पूरा आकाश उसका अपना किंतु जल बरसाकर उसका समूचा अस्तित्व समाप्त

https://www.evidyarthi.in/

होजाता है । उसी तरह करुणाशील व्यक्तित्व भी संसार में करुणा का जल लेकर आता है ; अपने वह तो दूसरों के ही सुख – दुख से सुखी – दुखी होता रहता है और अपने को बाँटता रहता है । इसी उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है । नभ में उसका अपना कोई कोना भले न हो , किन्तु जहाँ कहाँ हरीतिमा का उल्लास और सौन्दर्य है उसमें वह व्याप्त है । इसी तरह करुणशील व्यक्तित्व अपने को मिटाकर संतप्त प्राणियों के सुख – चैन में व्याप्त हो जाता है । महादेवी की कविताओं में ध्वनित दुख या करुणा की यही दिशा है ।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/